समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ जनवरी २०२६ ● वर्ष : २९ ● अंक : ७ (निरंतर अंक : ३४३) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

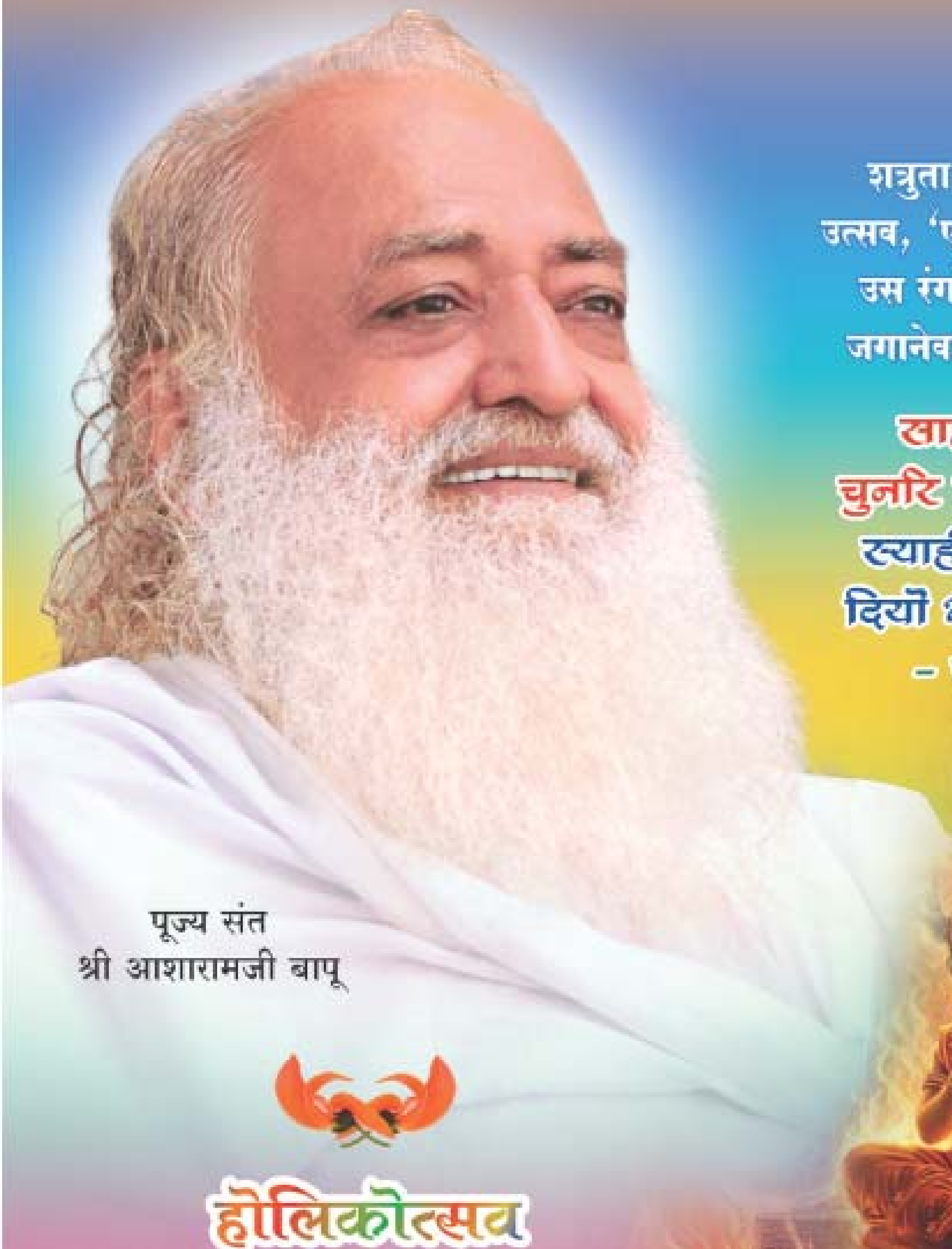

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

शत्रुता पर विजय पाने का उत्सव, 'एक में सब, सबमें एक' उस रंगरेज साहब की प्रीति जगानेवाला उत्सव है होली ।

साहब है रँगरेज
चुनरि मोरि रँग डारी ।
स्याही रंग छुड़ाय के
दियो भक्ति को रंग ।।
- पूज्य बापूजी

होलिकोत्सव
२ से ४ मार्च

बापूजी ने धर्मरक्षा व गौ-गंगा-गीता के सत्प्रचार के लिए जीवन समर्पित कर दिया ।
- श्री दिलीपदास त्यागीजी, अयोध्या

जैसी बनाओगे वृत्ति, वैसी होगी उपलब्धि

- पूज्य बापूजी

एक होता है जगदाकार विचार - यह मकान है, यह फूल है, यह मेरा है - जैसे सब लोग कर रहे हैं। इन्द्रियों के द्वारा जगदाकार विचार करने से जगत में राग और द्वेष होता है। सारे व्यक्तियों में घूमो, सारी वस्तुओं में घूमो, परिणाम में राग और द्वेष की सृष्टि बनती है। राग में फँसते हैं, द्वेष से खौलते रहते हैं। राग की हुई वस्तुएँ, व्यक्ति रहते नहीं हैं, जीव बेचारा तड़प के मर जाता है। द्वेष की हुई सारी वस्तुएँ, व्यक्ति और विपरीत परिस्थितियाँ - सब मिटते नहीं हैं, हृदय में द्वेष बना रहता है। द्वेष अंदर में जलाता रहेगा, राग बाँधता रहेगा। इसीलिए सब कुछ करने के बाद भी लोग दुःखी रहते हैं।

दूसरा है कि चलो जगदाकार वृत्ति नहीं की तो फिर अपने विषय में सोचोगे। अपने बारे में सोचेंगे तो अपनी अच्छाइयाँ दिखेंगी तो अहंकार आयेगा और कमियाँ दिखेंगी तो फिर विषाद आयेगा। तो अपनी तरफ की वृत्ति लाओगे तो अहंकार या विषाद में डूब मरना है।

तीसरा है, अगर आपने यही वृत्ति भगवदाकार कर दी तो हृदय में भगवद्भाव प्रकट हो के आपको भगवत्सुख, भगवत्सामर्थ्य, भगवद्-आनंद से आनंदित करेगा और भगवान को आकर्षित करेगा।

चौथा तरीका यह है कि आपने इसी वृत्ति की सूक्ष्मता सत्संग के द्वारा सुनी और आत्माकार विचार हुए हैं तो जिस आत्मसत्ता से 'यह बुरा है, यह अच्छा है, यह 'मैं' हूँ और यह मेरी गलती है' यह दिखता है उसको बोलते हैं 'मैं', 'मैं' का मूल स्वरूप है आत्मा। अगर उस आत्मा के ज्ञान को सुना, मनन किया और मनन करते-करते गहरे शांत हुए तो उस आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार होता है। यह सबसे ऊँचा फल है।

तो भगवदाकार वृत्ति जगदाकार और अहमाकार से बहुत ऊँची है लेकिन भगवदाकार वृत्ति से भी तत्त्वचिंतन, आत्मचिंतन ऊँचा है, आखिरी है।

होलिकोत्सव
२ से ४ मार्च

आनंदित-उल्लसित करनेवाला पर्व :

होली

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं, गणपति दिवस मनाओ । गणपतिजी ने शिव-पार्वती का पूजन किया और शिव-पार्वती ने उनको हृदय से लगाया एवं प्रीतिपूर्वक आशीर्वाद दिया : ''बेटा ! तू उम्र में तो कार्तिकेय से छोटा है परंतु तेरी समझ अच्छी है (ऊँची है), तेरा पूजन पहले होगा ।'' तो ऐसा गणेश-शिव-पार्वती दिवस - मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाओ । यह प्रेम दिवस मनाने से विश्वमानव का मंगल होगा ।

---

२ से ४ मार्च तक होलिकोत्सव है । इसकी महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : 'होली' अर्थात् हो... ली... । जो हो गया उसे भूल जाओ । निंदा हो ली सो हो ली... प्रशंसा हो ली सो हो ली... तुम तो रहो आत्ममस्ती और आत्मानंद में ।

होली एक ऐसा अनूठा त्यौहार है जिसमें गरीब की संकीर्णता और अमीर का अहं दोनों किनारे रह जाते हैं । दबा हुआ मन एवं अहंकारी मन, दूषित

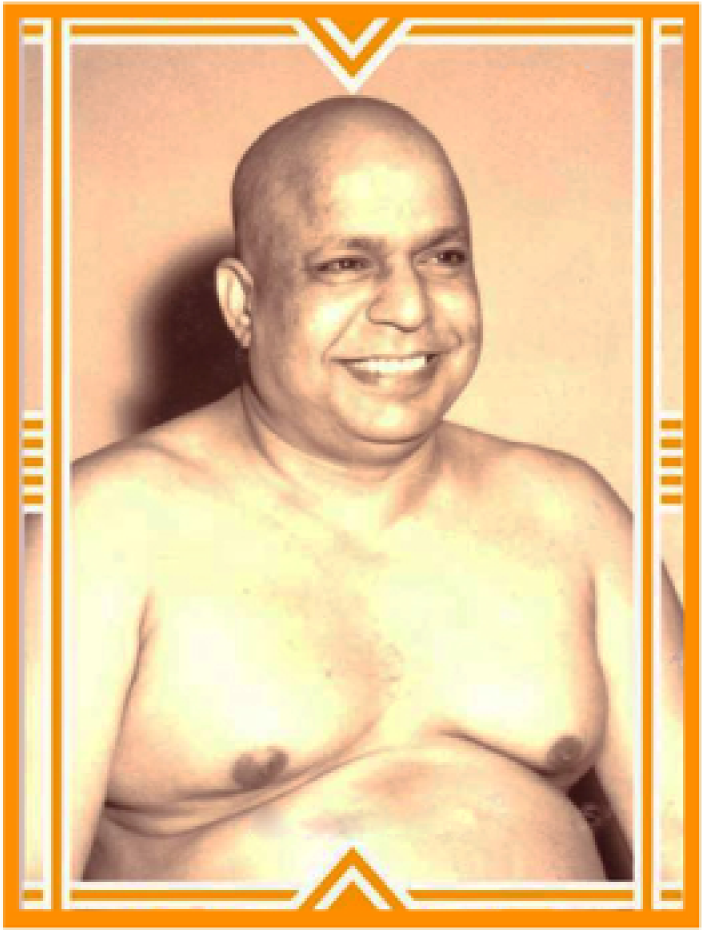

सभी वेदांत के अधिकारी हैं

- स्वामी अखंडानंदजी

श्रीमद्भागवत में बताया है कि जब हृदय में ईश्वर-विषयक चर्चा श्रवण करने की इच्छा होती है तो ईश्वर तत्क्षण हृदय में आकर बैठ जाता है। असल में ईश्वर की कृपा, जन्म-जन्म के पुण्यों-सत्कर्मों का परिपाक, गुरु की कृपा तथा अपने हृदय में शुभेच्छा होवे तब वेदांत सुनने को मिलता है। सुनने के बाद समझ में आवे - यह और भी कृपा की बात है।

एक बात तो यह है कि बहुत लोगों को तो यह सुनने को मिलता ही नहीं - सुनानेवाला मिले तब तो सुनें। दुनिया में तो राजकथा, भोगकथा, जगत-कथा, बहू-बेटी की बात सुनानेवाला मिलेगा, ब्रह्मविद्या का सुनानेवाला तो जल्दी मिलेगा नहीं ! और सुनने को मिले भी, तब भी सुनने पर भी यदि बुद्धि परिच्छिन्न-ग्राहिणी होवे, पूर्वग्रह से ग्रस्त हो तो सार ग्रहण नहीं कर पाती।

एक बार मैं पैदल जा रहा था तब रास्ते में एक परिचित सेठ मिल गये। रास्ते में चलते-चलते उन्होंने मुझको संसार की इतनी चर्चा सुनायी, इतना राग सुनाया, इतना द्वेष सुनाया, इतने गुण-दोष सुनाये कि हमको तो सुनकर आश्चर्य हो गया कि इन लोगों का दिमाग कितना पक्का होता है कि इतने राग-द्वेष के वातावरण में रहते हैं, उसकी चर्चा करते हैं और इनका हार्ट फेल नहीं होता ! इतनी जलन अपने दिल में रखते हैं ! उनके द्वारा तो यही चर्चा होती है, 'उनमें यह दोष है, उनमें यह दोष है - संसार में सब दोष हैं', गुण की कोई चर्चा ही नहीं ! हम लोग तो ऐसा सुन नहीं सकते। अरे, इसमें परब्रह्म-परमात्मा है, यह बात तो बिसर गयी। नितांत असत् चर्चा में संसार लगा हुआ है। इसमें तो भगवान किसीको सद्बुद्धि दें, थोड़ा परिच्छिन्न पदार्थों से वैराग्य होवे और यह मन में आवे कि हम तो अपरिच्छिन्न ब्रह्म-पदार्थ का श्रवण करेंगे, तब यह महाराज, जो सबके दिल में एक है, उसके बारे में सुनने को मिले।

जिससे अपना हृदय अशुद्ध होता हो ऐसी चर्चा न तो करनी चाहिए और न सुननी चाहिए। पर लोग तो यही नहीं समझते कि हृदय अशुद्ध होता कैसे है ? लोग तो यह कहकर डराते हैं कि वेदांत सुनोगे तो घर-गृहस्थी छूट जायेगी; पर वेदांत की घर-गृहस्थी से कोई दुश्मनी तो है नहीं। वेदांत की अर्थात् ज्ञान की दुश्मनी अगर किसीसे है तो केवल अज्ञान से है। ज्ञान तुम्हारा घर, तुम्हारा परिवार,

देश-विदेश के गणमान्यों की राय

भारत में संवाद व शिक्षा हेतु हो

मातृभाषा का उपयोग

''भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है बल्कि वह शक्ति, पहचान और आत्मसम्मान की रक्षा का स्रोत भी है। हमारे देश के युवाओं को अपनी मातृभाषा और स्थानीय बोलियों पर गर्व करना चाहिए कारण कि भाषाओं में असंख्य पीढ़ियों का सामूहिक ज्ञान, प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ और स्मृतियाँ निहित होती हैं।

किसी भी देश के नागरिकों का अपनी मातृभाषा के प्रति आदर उनके सांस्कृतिक प्रेम तथा राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक होता है। जिस देश के नागरिक अपनी मातृभाषा की उपेक्षा करके दैनिक बोलचाल

तथा शिक्षा हेतु विदेशी भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं उस देश का धीरे-धीरे सांस्कृतिक पतन हो जाता है। हिन्दी भाषा के **प्रसिद्ध कहानीकार व उपन्यासकार श्री शिवमूर्ति** ने हाल ही में भारतवासियों को अपनी जड़ों की ओर आने के लिए प्रेरित करते हुए कहा : ''भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है बल्कि वह शक्ति, पहचान और आत्मसम्मान की रक्षा का स्रोत भी है। हमारे देश के युवाओं को अपनी मातृभाषा और स्थानीय बोलियों पर गर्व करना चाहिए कारण कि भाषाओं में असंख्य पीढ़ियों का सामूहिक ज्ञान, प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ और

प्रार्थना सभा के नाम पर धर्मांतरण रैकेट
हुई गिरफ्तारी

'धर्मांतरण रैकेट में शामिल लोग हर शुक्रवार को हीलिंग प्रेयर का आयोजन करते थे। इन सभाओं में लोगों को बीमारी से राहत पाने के लिए जीसस क्राइस्ट से प्रार्थना करने के लिए कहा जाता था और उन पर दबाव बनाया जाता था कि यदि वे स्थायी इलाज चाहते हैं तो यह सिर्फ ईसाई धर्म अपनाने पर ही सम्भव है।'

पैसों के लालच में ईसाई मिशनरियों के इशारे पर काम कर रहे गिने-चुने स्वार्थी तत्त्व भोले-भाले हिन्दुओं को सनातन धर्म से विमुख करने का अपराध कर रहे हैं। हाल ही में रतलाम के शिवनगर क्षेत्र में एक ऐसे धर्मांतरण रैकेट का खुलासा हुआ, जिसमें कुछ स्थानीय लोग आदिवासियों को बीमारियों से राहत पाने के लिए ईसाई प्रार्थना सभा में बुला रहे थे और उन्हें ईसाइयत में धर्मांतरित होने के लिए मजबूर कर रहे थे। पुलिस ने इस रैकेट में शामिल लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस जाँच के अनुसार 'धर्मांतरण रैकेट में शामिल लोग हर शुक्रवार को हीलिंग प्रेयर का आयोजन करते थे। इन सभाओं में लोगों को बीमारी से राहत पाने के लिए जीसस क्राइस्ट से प्रार्थना करने के लिए कहा जाता था और उन पर दबाव बनाया जाता था कि यदि वे स्थायी इलाज चाहते हैं तो यह सिर्फ ईसाई धर्म अपनाने पर ही सम्भव है।'

अपना उल्लू सीधा करने के लिए किसीकी असहाय अवस्था, कमजोर स्थिति का फायदा उठाना, स्वयं को समाजसेवी दिखलाकर उसका धर्म-परिवर्तन करना न केवल मानवता के साथ विश्वासघात है बल्कि हमारे देश की धार्मिक एवं

सांस्कृतिक अखंडता के लिए भी घातक है। **ईसाई पत्रकार व राजनीतिज्ञ सेवियो रोड्रिग्स** कहते हैं : ''ईसाई धर्मांतरण और ईसाई

व्यक्ति को कितनी जमीन चाहिए ?

- पूज्य बापूजी

''भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है बल्कि वह शक्ति, पहचान और आत्मसम्मान की रक्षा का स्रोत भी है। हमारे देश के युवाओं को अपनी मातृभाषा और स्थानीय बोलियों पर गर्व करना चाहिए कारण कि भाषाओं में असंख्य पीढ़ियों का सामूहिक ज्ञान, प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ और स्मृतियाँ निहित होती हैं।

एक जमींदार के पास हजारों बीघा जमीन थी। उसने घोषणा कर दी कि जिसको मेरी जमीन चाहिए वह आ जाय। एक आया आकांक्षी व्यक्ति, बोला : ''मुझे चाहिए। मैं पैसे नहीं दे सकता।''

बोले : ''कोई बात नहीं, मेरे को दान करनी है।''

''कितनी दोगे ?''

''तुम यहाँ से जहाँ तक जा सको, घेर लो मेरी जमीन। लेकिन शाम को सूरज ढलने के पहले इसी जगह पर आना है।''

उस व्यक्ति ने सोचा, 'ऐसा मौका ! अब नाश्ता क्यों करूँ ? इतना नाश्ते में समय लगेगा तो दौड़ना कम हो जायेगा। पानी क्यों पिऊँ ? बात क्यों करूँ ?

✲ भारत माता को 'डायन' कहनेवाले मुस्लिम नेता की हुई गिरफ्तारी, पुलिस ने निकाला जुलूस, नेता से कान पकड़ के मँगवायी माफी : मध्य प्रदेश के विदिशा जिले के सिरोंज क्षेत्र में एक राजनीतिक दल के मुस्लिम नेता ने सोशल मीडिया पर भारत

माता के लिए घृणास्पद टिप्पणी करते हुए लिखा कि 'इस डायन की पूजा पिशाच करें।' भारत माता के अपमान से आहत हुए लोगों ने भारी संख्या में सड़कों पर उतरकर आपत्तिजनक टिप्पणी करनेवाले नेता का पुतला जलाया और उसके खिलाफ कड़ी कार्यवाही की माँग की। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा २९९ के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया। थाने से अदालत ले जाते समय पुलिस अधिकारियों ने सड़क पर उसका जुलूस निकाला, जिसमें उसने बार-बार 'भारत माता की जय !' के नारे लगाये और कान पकड़कर सार्वजनिक माफी माँगी।

✲ मुस्लिम शिक्षक द्वारा जलायी गयीं भारत माता व हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरें, बच्चों पर बनाया कुरान व नमाज पढ़ने का दबाव, पुलिस ने की गिरफ्तारी : उज्जैन (म.प्र.) में 'शकील मोहम्मद' नामक सरकारी शिक्षक ने विद्यालय में बच्चों के सामने गणेशजी, सरस्वतीजी और भारत माता की तस्वीरें जलायीं तथा यदि वे उसके इस कृत्य का खुलासा करते हैं तो बच्चों को जान से

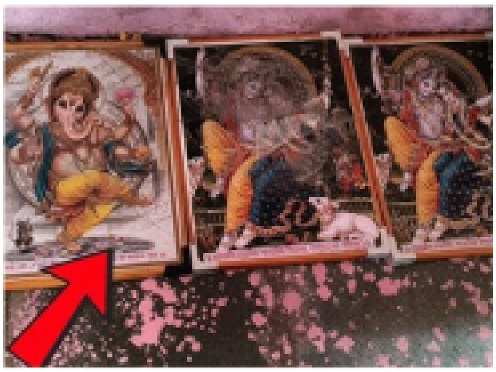

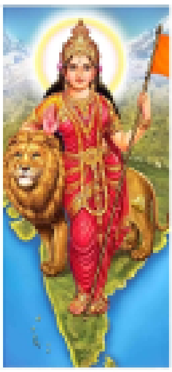

मारने की धमकी दी। उसने राष्ट्रध्वज को जलाने का भी प्रयास किया और बच्चों पर कुरान व नमाज पढ़ने के लिए दबाव बनाया। एक विद्यार्थी ने अपने अभिभावकों को इसकी जानकारी दी तो उन्होंने शकील के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज करायी, जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उसे निलम्बित कर दिया गया। राष्ट्रद्रोह करनेवाले और भारत के संविधान के द्वारा नागरिकों को दिये गये धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार को छीननेवाले ऐसे अपराधी को अत्यंत कड़ी सजा देनी चाहिए, केवल निलम्बित करना पर्याप्त नहीं है।

विधर्मियों द्वारा हमारे देवी-देवताओं, संत-महापुरुषों, सांस्कृतिक प्रतीकों व राष्ट्रीय धरोहरों का अपमान करने, सनातन धर्म को नष्ट करने के प्रयास निरंतर किये जा रहे हैं। ऐसे दौर में प्रत्येक संस्कृतिप्रेमी का यह दायित्व है कि वह अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए प्राणपण से जुट जाय, हिन्दू धर्म विरोधी कृत्यों के खिलाफ आवाज उठाये।

कफदोष का प्रकोप व शमन

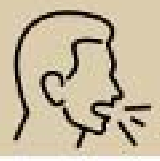

(वसंत ऋतु : १८ फरवरी से २० अप्रैल तक)

वसंत ऋतु में कफ कुपित रहता है । मधुर, नमकीन, चिकनाईयुक्त, शीत, भारी व ज्यादा आहार कफ उत्पन्न करता है । उड़द, तिल, ककड़ी, खीरा, भिंडी, सूखे मेवे, सिंघाड़ा, सेब, अनन्नास, अमरूद, सीताफल, गन्ना, भैंस का दूध, मैदे के पदार्थ, दही, घी, मक्खन, मिश्री आदि कफ बढ़ाते हैं। अतः इनके सेवन से बचें।

कफ-शमन में सहायक आहार-विहार

तीखा, कड़वा व कसैला रस अधिक लें। काली

मिर्च, हींग, तुलसी, अदरक, लौंग आदि का सेवन करें । आहार सूखा, सुपाच्य, अल्प व उष्ण गुणयुक्त लें । सहजन, मेथी, हल्दी, राई, अजवायन, मूँग, बिना छिलके के भुने हुए चने खायें एवं व्यायाम करें। फ्रिज का पानी न पियें, भोजन करके न सोयें, बासी और ठंडे व कफवर्धक पदार्थ – केला, चीकू, आइसक्रीम आदि न खायें।

❊ शहद* कफ-शमन हेतु सर्वोत्तम है।

❊ पानी (१ लीटर) को चौथाई भाग (२५० मि.ली.) शेष रहने तक उबालकर पियें। अनुकूल पड़े तो उसमें सोंठ के टुकड़े डाल के उबालें।

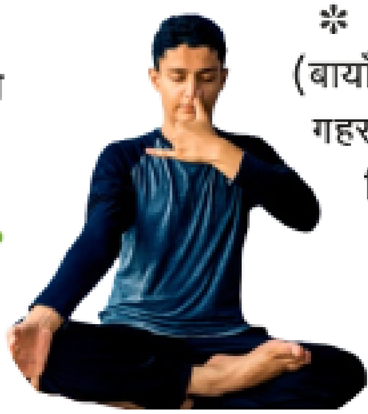

❊ ३ से ५ सूर्यभेदी प्राणायाम (बायाँ नथुना बंद कर दायें से गहरा श्वास ले के एक से सवा मिनट अंदर रोकें, फिर बायें से छोड़ें) दिन में २ बार करें।

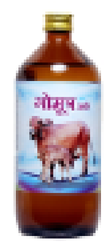

❊ प्रातः गोझरण* अथवा 'गोझरण अर्क*' या 'गोझरण वटी*' (१-२ गोली) का सेवन समस्त कफरोगों में लाभदायी है।

❊ आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध

मिलावटी दवाई ने
२० से अधिक मासूमों की ली जान

जब लोभ और स्वार्थ उन क्षेत्रों में प्रवेश करने लगते हैं जो लोगों के स्वास्थ्य और जीवन से जुड़े हों तब वे समाज के लिए जानलेवा खतरा बन जाते हैं। तमिलनाडु की एक कम्पनी द्वारा बच्चों के लिए बनायी गयी 'कोल्ड्रिफ कफ सिरप' नामक एलोपैथिक दवा के सेवन से हाल ही में मध्य प्रदेश और राजस्थान में २० से अधिक बच्चों की मृत्यु हो गयी तथा कइयों के गम्भीर रूप से बीमार होने की घटनाएँ सामने आयी हैं।

उक्त दवा के नमूने (सैम्पल) की जाँच हुई तो उजागर हुआ कि पैसे बचाने के लिए ग्लिसरीन या प्रोपाइलीन ग्लाइकॉल के स्थान पर डायएथिलीन ग्लाइकॉल (४८.६%) मिलाया गया था, जो औद्योगिक कार्यों में प्रयोग होनेवाला रासायनिक तत्त्व है।

मानव-सेवा का आदर्श रूप देखने को मिलता है पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से संचालित आरोग्य व औषधि-निर्माण केन्द्रों पर। इनके माध्यम से उत्तम गुणवत्ता वालीं आयुर्वेदिक औषधियाँ अत्यंत अल्प दामों में सुलभ करायी जाती हैं, साथ ही देशभर में अनेक स्थानों पर आरोग्य केन्द्रों की स्थापना की गयी है, निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाये जाते हैं, जिनमें निःस्वार्थ भाव से मरीजों की सेवा की जाती है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।...' इस सिद्धांत पर चलते हुए पूज्यश्री के मार्गदर्शन में समाज को जिस प्रकार आयुर्वेदिक चिकित्सा का लाभ मिल रहा है वह सभीके लिए प्रेरणास्रोत है।

बापूजी द्वारा प्रेरित इन सेवाओं से हमें निःस्वार्थ भाव से समाजरूपी देवता की सेवा करने की सीख मिलती है, जिसे अपनाने से स्वास्थ्य-क्षेत्र जैसे संवेदनशील क्षेत्र से ही नहीं अपितु हर क्षेत्र से लोभ और स्वार्थ पूरी तरह उन्मूलित किये जा सकते हैं।

जीवन को तेजस्वी, सच्चरित्रवान व महान बनानेवाला अमृतमय सत्साहित्य

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

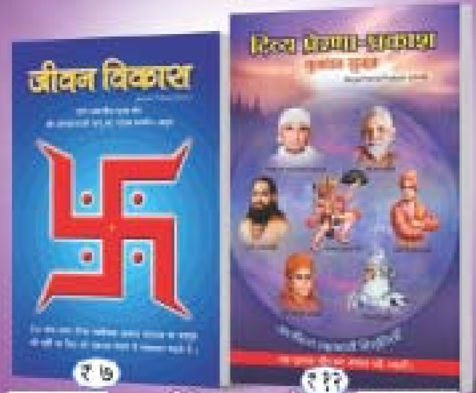

ऐसे व्यावसायिक प्लेटफॉर्म्स से सावधान रहें !

आश्रम के सत्साहित्य सेवाभाव से मानवता के मंगल के लिए अत्यंत अल्प मूल्यों में लोगों को उपलब्ध कराये जाते हैं किंतु आजकल exoticindiaart.com जैसी कुछ वेबसाइट्स पर उन्हें कई गुना अधिक दामों पर बेचा जा रहा है। सभी सावधान रहें, ऐसे व्यावसायिक प्लेटफॉर्म्स से साहित्य खरीदकर ठगी के शिकार न हों।

हार्ड कॉपी | घर बैठे आश्रम के सत्साहित्य पाने हेतु स्कैन करें | ई-बुक

सर्दियों हेतु बल-पुष्टिदायी विशेष उत्पाद

खजूर, स्पेशल च्यवनप्राश, ब्राह्म रसायन, द्राक्षावलेह, वज्र रसायन टेबलेट, अश्वगंधा टेबलेट व चूर्ण, अश्वगंधा पाक

₹ १२० १ कि.ग्रा. | ₹ ३०० १ कि.ग्रा. | ₹ ६०० ५०० ग्रा. | ₹ २७० ५०० ग्रा. | ₹ १७५ २५ गोलियाँ | ₹ ८० १०० ग्रा. | ₹ ६० ८५ ग्रा. | ₹ २७५ ४५० ग्रा.

₹ ८० १ कि.ग्रा.

रसायनरहित (chemical free)

देशी गुड़

शुद्ध देशी गुड़ खाओ और खिलाओ !

बल-वीर्यवर्धक, वात-पित्तशामक, मूत्र की शुद्धि करनेवाला एवं नेत्र-हितकर । हड्डियों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने में सहायक ।

प्राकृतिक

गुड़ की डली

हानिकारक चॉकलेट नहीं, बल, बुद्धि और उत्तम स्वास्थ्य प्रदायक गुड़ की डली खायें ।

₹ ७० ५०० ग्राम

आँवला मिश्री चूर्ण

ऊर्जावर्धक, शक्तिदायक, धातुरक्षक व पौष्टिकता से पूर्ण

₹ ६० ४०० ग्राम

आँवला कैंडी

मीठी व नमकीन दोनों उपलब्ध

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

₹ १०० ४०० ग्राम

आँवला पाउडर

बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

₹ ६० २०० ग्राम

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

₹ ७५ ७०० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

पर्यावरण-सुरक्षा, स्वास्थ्य-लाभ व संस्कृति के पुनरोद्धार हेतु देश-विदेश में मनाया गया तुलसी पूजन दिवस

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

वापी (गुज.)

नंदिनीनगर, जि. दुर्ग (छ.ग.)

विदेशों में

पांडेसरा-सूरत

उदयपुर (राज.)

सेरिलिंगमपल्ली-हैदराबाद

प्रतापपुर (नेपाल)

मोहाडी, जि. भंडारा (महा.)

कृष्णानगर-अहमदाबाद

कोदला, जि. गंजाम (ओडिशा)

ब्रैम्पटन (कनाडा)

दमोह (म.प्र.)

जट्टारी, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

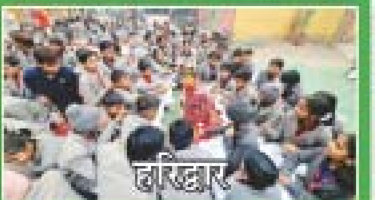
हरिद्वार

जनकपुर (नेपाल)

कवर्धा (छ.ग.)

नाला सोपारा, जि. पालघर (महा.)

भुसावल (महा.)

सैन मार्टिन-कैलिफोर्निया

जामताल, जि. मयूरभंज (ओडिशा)

देसाईगंज, जि. गढ़चिरोली (महा.)

मोशी-पुणे

कैलाली (नेपाल)

निवाई (राज.)

गाजियाबाद

पंचेड़, जि. रतलाम (म.प्र.)

हेटौडा (नेपाल)

गणमान्यों को दिये गये तुलसी गमले व सत्साहित्य

श्री अशोकभाई [illegible]

श्री [illegible], जलसंसाधन विभाग राज्यमंत्री, गुज.

डॉ. विजय कुमार सिंह, जिलाधिकारी, मेरठ, उ.प्र.

श्री संजयसिंह महिडा, राजस्व राज्यमंत्री, गुज.

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु देखें www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी